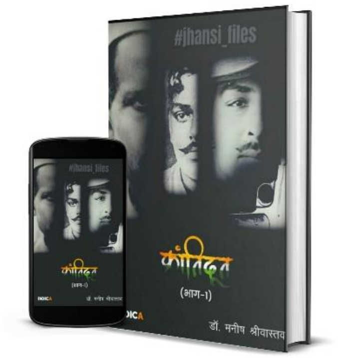
क्रांतिदूत
झाँसी फाइल्स तथा काशी





मैंने डॉ मनीष श्रीवास्तव की यह दोनों पुस्तकें बिना किसी जानकारी और अपेक्षा के प्रारंभ की थीं। पर जब शुरू की तो बिना समाप्त किये रखना कठिन हो गया। भारत के सुने-अनसुने, जाने-अनजाने क्रांतिदूतों की यह जीवन गाथा उनके समय में ले जाने का अद्भुत प्रयास हैं यह पुस्तकें। मनीष जी ने जिस तरह से क्रांतिकारियों के जीवन, उनके संघर्ष, उनके उद्देश्य, उनके मानवीय पहलूओं के इर्द गिर्द अपनी लेखनी जोड़ी है वह वाकई प्रशंसनीय है।

पुस्तक पढ़ एहसास हुआ कि बिस्मिल, सचिन्द्रनाथ सान्याल, राजेन्द्र लाहिड़ी, अशफ़ाक़, आज़ाद, भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु,यह सभी क्रांतिदूत होने के साथ एक आम इंसान भी थे। वो हँसते भी थे, मज़ाक भी करते थे, आपस में लड़ते- झगड़ते भी थे। इस सब के बावजूद उन्होनें अपना ध्येय अपना जीवन बलिदान कर प्राप्त किया। यह देश उन्हें क्यों भूल गया, यह अपने आप में शोध का विषय है।

उन्हीं सब भूली-बिसरी यादों को एक क्रम में सजाने का यह प्रयास सराहनीय है।

क्रांतिदूत श्रृंखला संभवतः10 भागों में प्रकाशित होगी। पहले दो भाग जो मैंने पढ़े वो अभी आज़ाद के झांसी और काशी के प्रवास और शेखर के चंद्रशेखर आजाद बनने और निखरने की गाथा है।

मैं उन सब को, जो भारत के भूले और शायद नकारे क्रांतिकारी पर्व को जानना चाहते हैं, को यह पुस्तकें recommend करता हूँ। इतिहास को उपन्यास लेखनी की तरह से प्रस्तुत करने का यह अनूठा प्रयास है। लेखक को साधुवाद।